शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ३१ : नई दिल्ली : ६-१२ नवम्बर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ४६ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४६, सर्व ६८ सानंद केलवा विराज रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यप्रवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का त्रिदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन ५ नवम्बर से प्रारंभ हो गया है। १० नवम्बर को चतुर्मास की समाप्ति के दूसरे दिन पूज्य आचार्यप्रवर केलवा से विहार कर देंगे। लगभग दो महीने तक पूज्य आचार्यवर मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करेंगे। आगामी १५ जनवरी २०१२ को मर्यादा महोत्सव हेतु आमेट पधार जाएंगे।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

श्रीडूंगरगढ़ प्रवास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां (८७८)

"१६ अप्रैल १६६७, बुधवार। चैत्र शुक्ला नवमी का दिन। आचार्य भिक्षु ने आज के ही दिन विक्रम संवत १८१७ में अभिनिष्क्रमण किया था। मारवाड़ के बगडीनगर में घटित इस घटना का महत्त्वपूर्ण इतिहास बन गया। इस दृष्टि से आज का दिन बहुत शुभ है। स्वाभाविक रूप से आज का दिन मौन का निश्चित था, पर जनभावना को देखते हुए मैंने एक दिन पहले ही मौन साधना की। कल कृषिमंडी में भी जनसैलाब उमड़ पड़ा था। मैं मौन भाव से सबकी श्रद्धा स्वीकार करता रहा। आज श्रीडूंगरगढ़ में आकर मैं निर्भार बना हूं। मैंने यहां आने का वचन बहुत पहले ही दे दिया था। आज वह साकार हो गया, इसलिए मैं प्रसन्न हूं।

आज प्रातः हमने कृषिमंडी से प्रस्थान किया, उस समय सैकड़ों लोग वहां पहुंच चुके थे। घंटाघर तक पहुंचते-पहुंचते लोगों की संख्या काफी बढ़ गई। एक विशाल और व्यवस्थित जुलूस के साथ शहर में प्रवेश किया। सड़क के दोनों ओर खड़े लोगों के हाथ जुड़े और सिर झुक गए। उन सबकी वन्दना स्वीकार करते हुए हम आगे बढ़ते रहे। मालू भवन में पहुंचकर जुलूस सभा में परिणत हो गया। स्वागत कार्यक्रम में गीतों और वक्तव्यों के बीच त्याग-तपोमय स्वागत ने मेरे मन को प्रभावित किया। इस शृंखला में तपस्वी श्रावक मूलचन्दजी बाफणा ने तेरह दिन की और पूनमचन्दजी बाफणा ने आठ दिन की तपस्या स्वीकार की। सोलह दम्पतियों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। एक सौ पचीस व्यक्तियों ने श्रावक के बारह व्रत स्वीकार किए। इकसठ कन्याओं ने श्रावक-सम्बोध सीखने का संकल्प व्यक्त किया। पूनमचन्दजी मालू ने सात दिन के लिए श्रमणोपासक की विशेष साधना स्वीकार की।

प्रातःकालीन प्रवचन साध्वीप्रमुखा को देना था, पर जनता को देखकर मन बदल गया। साध्वीप्रमुखा के संक्षिप्त वक्तव्य के बाद प्रवचन मुझे ही देना पड़ा। जनता का प्रवाह उत्तरोत्तर बढ़ता ही चला गया। मैंने प्रवचन में प्रासंगिक चर्चा के बाद अभिनिष्क्रमण दिवस के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए। प्रवचन का सार इस प्रकार है 'आचार्य भिक्षु निस्पृह साधक थे। वे आत्मकल्याण का महान संकल्प ले सत्य की खोज में निकल पड़े। उनकी साधना, आराधना और सत्यनिष्ठा ने उनको अध्यात्म की ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया। आज तो वे लाखों लोगों के आधार बन गए हैं। उनके नाम-स्मरण से ही चमत्कार का अनुभव होता है। धर्म और अधर्म का कभी मिश्रण नहीं हो सकता तथा पुण्य का बन्ध स्वतंत्र नहीं हो सकता। आचार्य भिक्षु के इन सिद्धान्तों को गंभीरता से समझने वाला ही सच्चा/पक्का तेरापंथी कहला सकता है। आचार्य भिक्षु ने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प किया, वैसे ही व्यावहारिक जीवन में अनुशासन को महत्त्व दिया। वर्तमान के अनुशासनहीन वातावरण में उन जैसे अनुशासन-पुरुष की अपेक्षा है। आज के राजनेताओं को अनुशासन की छड़ी से हांकने की क्षमता उस अध्यात्मपुरुष में थी। यदि

आज मैं दिल्ली में होता तो देश के नेताओं को अनुशासित होकर देश-हित में कार्य करने की बात अवश्य कहता।'

१७ अप्रैल, गुरुवार। आज तुलसी सेवा संस्थान के लोकार्पण का कार्यक्रम था। कार्यक्रम के विशेष अतिथि थे राजस्थान के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री राजेन्द्रसिंह राठौड़। उन्होंने अपने सौभाग्य की सराहना करते हुए कहा 'गणाधिपति तुलसी केवल राजस्थान या भारत की ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व की थाती बन गए हैं। आपने अणुव्रत के माध्यम से देश की जनता में आत्मानुशासन जगाया है। अणुव्रत स्व-पर कल्याण का सर्वमान्य व्यापक दर्शन है। अणुव्रत के द्वारा आपने नैतिक मूल्यों की सुरक्षा की है।'

सुमेरमलजी डागा के अध्यक्षीय वक्तव्य के बाद संस्थान के मंत्री जतन पारख ने वहां चल रही प्रवृत्तियों की विस्तार से जानकारी दी। मैंने अपने वक्तव्य में कहा 'मैं शरीर हूं, यह मानना अविद्या है, अज्ञान है। मैं चिदात्मा हूं, यह अवबोध विद्या है। हम आत्मा तक पहुंचें और चेतनावान बनें, यह अपेक्षा है। इस संस्थान के साथ लोगों ने मेरा नाम जोड़ा है। मेरी दृष्टि से इसका 'सेवा संस्थान' नाम ही पर्याप्त है। सेवा शब्द अपने आप में बहुत व्यापक है। मैं चाहता हूं कि जहां मेरा नाम है, वहां नैतिक मूल्य मुखर होने चाहिएं। सेवा को सही मानें तथा कर्तव्य का निर्वाह करें, तभी ऐसे संस्थानों की सार्थकता है।'

१८ अप्रैल, शुक्रवार। आज अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा पंचदिवसीय स्वास्थ्य शिविर का प्रारंभ किया गया। दिल्ली के डॉक्टर पृथ्वीराज कुचेरिया अपनी टीम के साथ तीन दिन पहले ही यहां पहुंच गए। श्रीमती शान्ता पुगलिया और कन्हैयालालजी छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। डॉक्टर कुचेरिया ने लेपरोस्कोपी चिकित्सा पद्धति के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

अपने प्रवचन में मैंने कहा 'आज महिला मंडल द्वारा स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर प्रारंभ किया जा रहा है। प्रश्न हो सकता है कि धर्म के साथ सेवा का क्या सम्बन्ध है? मेरी दृष्टि में ऐसा कोई भी कार्य नहीं है, जिसके साथ धर्म न जुड़ा हो। जो भी कार्य किया जाए, उसके साथ प्रामाणिकता, ईमानदारी या नैतिकता जुड़ जाए तो वह धर्म का अंग बन सकता है। डॉ. कुचेरिया लाडनूं के हैं। इनका कार्यक्षेत्र दिल्ली है। ये संघ के प्रति समर्पित हैं और शासन के भक्त हैं। इन्हें भी अपने कार्य के साथ अणुव्रत को जोड़ना चाहिए। डॉ. नौलखा इनके सहयोगी हैं। ये श्रीडूंगरगढ़ के हैं और हमारे श्रावक हैं। दोनों अपने क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। अपेक्षा यही है कि चिकित्सा के साथ अणुव्रत को भी जोड़ा जाए।'

२० अप्रैल, रविवार। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी। भगवान महावीर की जन्मजयन्ती का प्रसंग। जनता बड़ी संख्या में उपस्थित थी। सब लोगों में उत्साह था। भगवान महावीर के प्रति आस्था को अभिव्यक्ति देनेवाले समूहगीत तथा एकलगीत प्रस्तुत किए गए। कुछ वक्तव्य हुए। डॉ. महावीरराज गेलड़ा मुख्य प्रवक्ता थे। उन्होंने महावीर के दर्शन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम लम्बा चला। जनता की भीड़ वक्ताओं को प्रोत्साहित कर रही थी। मेरा प्रवचन दो आयामों पर केन्द्रित रहा पहला आयाम था वीर की कसौटियां और दूसरा आयाम था नेतृत्व कला।

अपना प्रवचन प्रारंभ करते हुए मैंने कहा 'महावीर को कोई वीर बनकर ही जी सकता है। महावीर का दर्शन कायर और कमजोर का पथ नहीं है। जो महापथ पर समर्पित होता है, वही महावीर की दृष्टि में वीर है। वीर की दूसरी कसौटी है प्रतिस्रोत में चलने का संकल्प। महावीर के अनुसार कुछ बनने के लिए व्यक्ति को सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ प्रतिस्रोत में बढ़ते रहना चाहिए। तीसरा महत्त्वपूर्ण बिन्दु है त्याग की चेतना। अनासक्ति, त्याग और वैराग्य की भावना को आत्मसात करने वाला साधक अपनी अर्हता बढ़ा सकता है। वर्तमान के पदार्थबहुल और भोगप्रधान युग में त्याग की चेतना तिरोहित होती जा रही है। महावीर के भक्त कहलानेवाले लोगों से यह अपेक्षा की जाती है कि उनके कदम त्याग की दिशा में गतिशील बनें।'

नेतृत्व की कसौटियां प्रस्तुत करते हुए मैंने कहा 'देश के वर्तमान हालात को देखते हुए ऐसा लगता है कि आज के नेता अपनी पहचान खो रहे हैं। नेतृवर्ग की पहली अर्हता है चारित्रिक शुचिता। नेताओं का आचरण ऐसा नहीं होना चाहिए, जिस पर कोई अंगुली उठा सके। अपने चरित्र को उज्ज्वल रखने के साथ-साथ उन्हें पांच बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन पांचों बिन्दुओं को मैंने एक संस्कृत श्लोक में आबद्ध कर दिए हैं

सक्षमः सर्वदोषघ्नः, सामञ्जस्य विधायकः।
आदेयवचनश्चापि, नेता निर्णायको मतः॥

सक्षमता, निर्दोषता, सामंजस्य की मनोवृत्ति, वचन की आदेयता और निर्णायक क्षमता इन पांच विशेषताओं

से सम्पन्न व्यक्ति की नेतृत्व-क्षमता सफलता के शिखर को छू सकती है। देश के व्यक्ति इन कसौटियों पर खरे उतरकर ही देश का भला कर सकते हैं।

आज मध्यान्ह में सेवाकेन्द्र की साध्वियों की संभाल की। इस बार यहां केन्द्र की अधिष्ठात्री साध्वी जयश्री है। सेवाकेन्द्र में कुछ साध्वियां वृद्ध हैं और कुछ साध्वियां बीमार हैं। सबकी अच्छी सेवा हो रही है। सेवा करनेवाली साध्वियों में उत्साह है।

१६ अप्रैल को हम श्रीडूंगरगढ़ पहुंचे थे, उससे पहले ही वहां सामाजिक स्तर पर या संस्थाओं के स्तर पर चल रहे कुछ झंझटों को समेटने की बात मेरे सामने आई। इन झंझटों में जाने का मन कम था, पर श्रीडूंगरगढ़ आने के बाद समस्याओं को सुलझाना उचित लगा। प्रस्तुत सन्दर्भ में नौरतनमलजी पुगलिया से बात की। उन्होंने अपनी ओर से सम्पूर्ण समर्पण कर दिया। तब बात जम गई। दूसरे पक्ष से भी बात चली। समर्पण नहीं मिला। खैर, उसकी जरूरत भी नहीं थी। एकपक्षीय समर्पण से भी समाधान निकल सकता है, इस चिन्तन के आधार पर काम आगे बढ़ाया और सफलता मिल गई। वहां की स्थिति का समग्र विवरण यहां प्रस्तुत है

हम आठ वर्षों के बाद श्रीडूंगरगढ़ आए। इस अवधि में यहां के इतिहास में कुछ ऐसे पृष्ठ जुड़ गए, जो अनपेक्षित थे। दो-तीन घटनाएं ऐसी घटित हुई जिनसे उत्पन्न समस्याओं ने शहर के वातावरण को अस्वस्थ बना दिया।

१. तुलसी सेवा संस्थान के अधिकारियों द्वारा दो-तीन व्यक्तियों के बारे में ऐसे शब्द कहे गए कि अमुक-अमुक व्यक्तियों को संस्थान में लेना ही नहीं है। इसके कारण समाज के कुछ व्यक्तियों में रोष के भाव जाग उठे।
२. दूसरी समस्या यहां के पंचायत भवन को लेकर थी। जिस समय इस भवन का निर्माण हुआ, नौरतनमलजी पुगलिया पंचायत के अध्यक्ष थे। यद्यपि उन्होंने निर्माण-कार्य में बहुत श्रम किया, पर उनके द्वारा शिलापट्ट पर लिखा गया नाम विवाद का कारण बन गया।
३. स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के समानान्तर कुछ युवकों ने एक नई संस्था खड़ी की, जिसका नाम रखा गया 'भिक्षु कला मंच'। उन्हें कुछ व्यक्तियों का सहयोग मिला और वे उनके हिमायती बन गए। उन्होंने विधिवत अपना कार्य करना प्रारंभ कर दिया। इससे भी वातावरण में तनाव बढ़ा।

उक्त तीनों समस्याओं के सन्दर्भ में गांव के प्रमुख व्यक्तियों ने, साधु-साध्वियों ने और यहां तक कि आचार्य महाप्रज्ञ ने भी प्रयास किया, किन्तु समाधान नहीं हुआ। लोग कोर्ट में चले गए और सुप्रीम कोर्ट तक जाने की तैयारी में थे। हम बीदासर में प्रवास कर रहे थे तो श्रीडूंगरगढ़ से कुछ लोग वहां आए। उन्होंने विवादों को निपटाने की प्रार्थना की। उस समय मेरी ऐसी मानसिकता नहीं थी कि मैं इन झंझटों में अपना समय लगाऊं।

हम श्रीडूंगरगढ़ कृषिमंडी में पहुंचे, उस दिन भिक्षु कला मंच के सदस्य मिलकर आए और बोले 'गुरुदेव! हम अपना बैनर लेकर जुलूस में सम्मिलित होना चाहते हैं। उस दिन मेरे मौन था। दूसरे दिन सूर्योदय के बाद मैंने कहा 'तेरापंथ समाज में संघीय संस्थाएं तीन हैं तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद तथा तेरापंथ महिला मंडल। इनके अलावा बैनर नहीं रखा जा सकता। हमारी सेवा करो, कोई मनाही नहीं है।' युवकों ने मेरी इस बात को सहजता से लिया। उन्होंने जुलूस में भाग लिया और शालीनता का परिचय दिया। इससे मैं प्रभावित हुआ और प्रसंगवश प्रवचन में इस अच्छाई का उल्लेख किया। उन्हें पहले अपनी भूल का भान नहीं था, यह बात नहीं थी। पर जहां आग्रह होता है, सब तन जाते हैं। उस दिन उनका मन बदला। वे मेरे पास आए। उन्होंने अपनी भावना प्रस्तुत की। मैंने युवक परिषद के सदस्यों और भिक्षु कला मंच के युवकों को प्रेरणा दी। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की ओर सामंजस्य के हाथ बढ़ाए और दूसरे दिन एक-दूसरे से क्षमायाचना की। ज्ञातव्य है कि उसी दिन से सब युवक एकजुट होकर सौहार्द भावना से काम में लग गए।

जिस दिन हमने श्रीडूंगरगढ़ में प्रवेश किया, उसी दिन स्वागत कार्यक्रम में स्थानीय विधायक किशनारामजी नाई ने पंचायत भवन के विवाद को निपटाने का अनुरोध किया। श्रावक बनेचन्दजी मालू ने भी इसी आशय की प्रार्थना की। इन दोनों के निवेदन पर मैंने इस विषय में ध्यान दिया। मैंने साध्वीप्रमुखा से कहा 'एक पक्ष के व्यक्तियों से तुम बात करो और जानो कि उनकी मानसिकता क्या है? वे क्या चाहते हैं।' दो-तीन बार लम्बी बातचीत के बाद उस पक्ष के लोगों ने कहा 'हम लिखित विचार दे रहे हैं यदि मान्य हो तो...।' दूसरी बात, मोतीलालजी भादानी आदि कुछ व्यक्ति अपने आपको समर्पित नहीं कर पाए। इस बात की जानकारी मिलने पर

मैंने कहा 'यदि विवाद निपटाना है तो शर्त किसी की मान्य नहीं होगी।'

दूसरी ओर स्थानीय प्रमुख श्रावकों ने अन्य पक्ष के नेता नौरतनमलजी पुगलिया से बातचीत की। वे बोले 'यद्यपि झुकने की मेरी मनोवृत्ति नहीं है। पर गुरुदृष्टि का जहां तक सवाल है, वे जो कुछ कहेंगे, मैं वही करूंगा। मेरा गुरु-चरणों में सर्वस्व समर्पित है। उनके वचन सदा मेरे सिर-आंखों पर रहेंगे।'

इधर तुलसी सेवा संस्थान के अधिकारी हमारे आगमन को निमित्त बनाकर श्रीडूंगरगढ़ पहुंच गए। उन्होंने अपने संस्थान का लोकार्पण समारोह आयोजित किया। उस अवसर पर हम स्वयं सेवा संस्थान में गए। वहां मैंने युवकों को सम्बोधित करते हुए कहा 'आपका सेवा संस्थान उपयोगी है। इससे बहुत लोगों को सुविधा मिल रही है। यह आपकी क्षमता और सूझबूझ का प्रतीक है। पर मैं इस संस्था के अधिकारियों और यहां के श्रावकों के बीच मनोमालिन्य नहीं देखना चाहता। क्या आप अपने बुजुर्गों से अतीत में हुई भूल के लिए क्षमायाचना नहीं कर सकते?' मेरे शब्दों ने युवकों के दिलों को छू लिया। उन्होंने विनम्रता के साथ कहा 'गुरुदेव! हम अन्तःकरण से अपनी भूल स्वीकार करेंगे और भरी सभा में करेंगे।'

२१ अप्रैल को हाजरी का कार्यक्रम था। प्रायः सभी साधु-साध्वियों की उपस्थिति थी। प्रसंगोपात्त मैंने कहा 'कल २२ अप्रैल, चैत्र शुक्ला पूर्णिमा के दिन प्रातः व्याख्यान के समय पंचायत भवन को लेकर वर्षों से चल रहे विवाद को सम्पन्न करना है।' इस घोषणा से पूरे गांव में हलचल-सी हो गई। चारों ओर से समाधान के प्रयास तेज हो गए।

२२ अप्रैल, मंगलवार। हम प्रवचन करने मालू भवन में गए। प्रवचन-स्थल जनता से खचाखच भरा था। सबकी आंखों में उत्सुकता थी और वे मुझे सुनना चाहते थे। मैंने क्षमा और उपशम भाव की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा कुछ वैसे ही प्रसंग सुनाए। प्रवचन पंडाल में सजीवता छा गई। श्रीडूंगरगढ़ में चल रहे विवादास्पद वातावरण को अच्छा मोड़ मिल गया। नौरतनमलजी पुगलिया ने पंचायत भवन में लिखा गया अपना नाम वापस ले लिया। वातावरण एकदम बदल गया। उधर युवकों का भी अच्छा विनम्र भाषण हुआ, जिससे समूचे गांव का वैमनस्य धुलकर साफ हो गया। वातावरण उल्लासपूर्ण हो गया।

उसी दिन सायंकाल स्नेह सम्मेलन और सहभोज हो गया। पूरे गांव में जो उल्लास और उत्साह परिलक्षित हुआ, उसे शब्दों से प्रकट नहीं किया जा सकता। मोतीलालजी भादानी दुलीचन्दजी श्यामसुखा आदि सभी गद्‌गद हो गए। आशातीत काम हुआ। यद्यपि यह कार्य हमारे सान्निध्य में हुआ, पर मैं इसका श्रेय महाप्रज्ञजी को देना चाहता हूं। क्योंकि उन्होंने भी अपने श्रीडूंगरगढ़ प्रवास में विवाद को निपटाने की दृष्टि से प्रयास किया था।

२३ अप्रैल, बुधवार। आज प्रातः मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ कन्यामंडल की कन्याओं ने संघीय पत्र-पत्रिकाओं तथा हमारी चुनी हुई कतिपय पुस्तकों का परिचय सरस शैली में प्रस्तुत किया। मध्याह्न के कार्यक्रम में हमारे द्वारा सम्बोधन प्राप्त स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान किया गया। उस अवसर पर मैंने श्रावक हरखचन्दजी भादानी तथा नौरतनमलजी पुगलिया को 'शासन-भक्त' सम्बोधन से सम्बोधित किया।

सायंकाल हम श्रीडूंगरगढ़ शहर से विहार कर स्थानीय विधायक किशनाराम की बाड़ी में पहुंचे। किशनारामजी का तेरापंथ समाज के साथ बड़ा आत्मीय सम्बन्ध है। समाज के काफी लोग बाड़ी पहुंच गए। मैंने उनको जीवन-निर्माण की प्रेरणा दी तथा व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प कराया। अचानक किशनारामजी खड़े होकर बोले 'गुरुदेव! मेरी शराब छुड़ाओ। मैंने उनकी मानसिकता को परखा। पूर्ण रूप से त्याग करना उन्हें कठिन लग रहा था। आखिर कुछ दिनों का अपवाद रखकर उनको शराब का परित्याग करा दिया।

२४ अप्रैल को हम लक्खासर गए। २५ अप्रैल को हमारा पड़ाव जंझेऊ में हुआ। २६ अप्रैल का प्रवास गुसाईंसर (गंगाशहर के चौपड़ा परिवार का गांव) में किया। अब गंगाशहर निकट आ गया है। आज का विहार पन्द्रह किमी. का रहा। पर प्रकृति की इतनी अनुकूलता रही कि यात्रा के सारे समय आकाश मेघाच्छन्न था और पवन का पंखा चलता रहा। प्रकृति को साधुवाद।

२७ अप्रैल को हम नवरंगदेसर आ गए। स्कूल में पड़ाव हुआ। स्कूल बहुत बड़ी है। बरामदा सुखकर रहा। रात को एक जाटनी बाजरी को रोटी और फोफलिया का साग बनाकर देने आई। उसने सुना कि पूज्य कालूगणी ने गुसाईंसर में ऐसा भोजन किया था। वही भोजन हमारे लिए लेकर आई। कितनी भली होती हैं ग्रामीण महिलाएं।

पर हम न तो रात को लेते हैं और न लाया हुआ लेते हैं। यह बात बहन को समझाई तो वह चली गई। दूसरे दिन सवेरे उसके घर जाकर उससे कुछ लिया।

२८ अप्रैल, सोमवार। आज एक होटल में दिनभर विश्राम किया। बहुत बड़ी होटल बन रही है। रात्रि-प्रवास भी वहीं किया। कल उदासर सामने है।

२८ मार्च को हमने जैनविश्वभारती से विहार कर रात्रि प्रवास ऋषभद्वार में किया। वहां रात को वर्षा आई। आज २८ अप्रैल को उदासर के निकट आए हैं। वही वर्षा हो रही है। कैसा योग है। अब महाप्रज्ञजी सामने दीख रहे हैं।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में

अब अंधेरी ओरी में रोज...

२६ अक्टूबर को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातःकालीन भ्रमण के दौरान अंधेरी ओरी परिसर में पधारे। मन्दिर के सम्मुख मंगलपाठ सुनाने के पश्चात आचार्यवर अंधेरी ओरी की ओर पधारे। वहां आचार्यवर ने संतों से कहा--'अब चतुर्मास के मात्र थोड़े ही दिन रह गए हैं। क्यों न आज से प्रतिदिन अंधेरी ओरी में आया करें।' पूज्यवर के इस फरमान पर सभी संत सहमत थे। आचार्यवर ने त्वरित निर्णय कर फरमाया--'अब केलवा से विहार होने तक प्रतिदिन अंधेरी ओरी में आने का भाव है।' निर्णय की क्रियान्विति करते हुए पूज्यप्रवर अब प्रतिदिन अंधेरी ओरी पधार रहे हैं।

समय को सफल बनाएं

२७ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातःकालीन प्रवचन के अन्तर्गत संबोधि के छठे अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'नास्तिक अवधारणा के अनुसार आत्मा, कर्म, कर्मफल आदि का कोई अस्तित्व नहीं है। इस मान्यता के कारण अनेक व्यक्ति महारंभ हिंसा आदि में प्रवृत्त रहते हैं। उनका चिंतन भोगवादी बन जाता है। इसके विपरीत आस्तिक दर्शन आत्मा, कर्म, कर्मफल आदि के अस्तित्व को स्वीकार करता है। उनकी आस्था अध्यात्म के प्रति होती है। व्यक्ति आस्तिक दर्शन को स्वीकार करता हुआ गलत कार्यों से बचने का प्रयास करे।'

पूज्यप्रवर ने गुजराती लोगों द्वारा मनाए जानेवाले नववर्ष का उल्लेख करते हुए कहा--'आज गुजराती लोगों के लिए नया वर्ष है। वर्ष आता है और चला जाता है। व्यक्ति यह चिंतन करे कि आने वाला वर्ष सफल कैसे बने? गत वर्ष मैंने धर्माराधना ज्यादा की अथवा पापाचार में ज्यादा समय व्यतीत किया? समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह अपनी गति से चलता रहता है। व्यक्ति अपने पवित्र कार्यों से उसे सफल बनाने का प्रयास करे। जीवन में त्याग-संयम का अधिकाधिक विकास हो। यह एक बड़ी शक्ति है। इससे व्यक्ति सुख और शान्ति को प्राप्त कर सकता है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। श्री रश्मिभाई जवेरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए दो कृतियां पूज्यप्रवर को भेंट कीं। श्री मुकुलभाई जवेरी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए तथा आभा संघवी ने गीत का संगान किया।

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का ९८वां जन्मदिवस

२८ अक्टूबर। कार्तिक शुक्ला द्वितीया। परमपूज्य आचार्यवर की मंगल सन्निधि में अणुव्रत प्रवर्त्तक गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के ९८वें जन्मदिवस का 'अणुव्रत दिवस' के रूप में समायोजन। प्रातःकालीन कार्यक्रम का प्रारंभ समणीवृन्द द्वारा प्रस्तुत 'तुलसी अष्टकम्' से हुआ। कार्यक्रम में शासनश्री मुनि सुखलालजी, मुनि प्रसन्नकुमारजी, मुनि तन्मयकुमारजी, मुनि जंबूकुमारजी(मिंजूर), समण सिद्धप्रज्ञजी, समणी कुसुमप्रज्ञाजी, चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी, महामंत्री श्री सुरेन्द्र कोठारी, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, तेरापंथ कन्यामंडल एवं युवती मंडल केलवा ने गीत, वक्तव्य आदि के माध्यम से परमपूज्य गुरुदेव तुलसी को अपनी भावांजलि अर्पित की। मुनि

धर्मरुचिजी ने तुलसी वाङ्मय के अन्तर्गत प्रकाशित और स्वयं द्वारा संपादित प्रवचन पाथेय के २२-३० तक के भाग पूज्य आचार्यवर को उपहृत किए। उल्लेखनीय है--मुनि धर्मरुचि द्वारा संपादित इस ग्रंथमाला के इक्कीस भाग पहले से प्रकाशित हैं।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अपने जीवन में अनेक विरोधों व संघर्षों को सहन किया। उनके जैसी सहनशक्ति हम सबके भीतर आए। उनका जन्म शताब्दी वर्ष सामने हैं। उस अवसर पर उनके द्वारा प्रदत्त सूत्रों को अपनाकर अपने जीवन को आलोकित करें।'

मंत्री मुनि सुमेरमलजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'परम श्रद्धेय गुरुदेव तुलसी ने अपने जीवन में अनेक नई रेखाएं खींचीं और समन्वय का सिद्धान्त जनता के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने धर्मसंघ को नये-नये आयाम दिए, जिनके द्वारा संघ आज जन-जन का पथदर्शन कर रहा है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'परम श्रद्धेय गुरुदेव तुलसी अध्यात्मपुरुष थे। उन्होंने नए-नए इतिहास रचे। उनमें महानता के बीज बचपन से ही निहित थे। अणुव्रत आन्दोलन मानव जाति को उनके द्वारा दिया गया महान अवदान है। एक सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी उनके विचार असाम्प्रदायिक थे। इतने वर्षों के बाद भी उस आन्दोलन की प्रासंगिकता कम नहीं हुई, बल्कि बढ़ती जा रही है। अपेक्षा है आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के अवसर पर अणुव्रत का पुनर्जन्म हो।

आचार्य तुलसी का एक अन्य महत्त्वपूर्ण अवदान है--समणश्रेणी, जिसके आज इकतीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। उसका कर्तृत्व गुरुदेव तुलसी के कर्तृत्व से प्रभावित है। मुनिश्री धर्मरुचिजी ने गुरुदेव तुलसी प्रवनमाला की नौ पुस्तकें अभी आचार्यवर को समर्पित कीं। मुनिश्री ने संपादन कार्य व्यवस्थित, कलापूर्ण और वैज्ञानिक ढंग से किया है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन उद्‌बोधन में कहा--'मैंने परमपूज्य गुरुदेव तुलसी को देखा। देखा तो बहुत से लोगों ने है, किन्तु मैं तो उन व्यक्तियों में से हूं, जो उनके अत्यन्त निकट रहनेवाले थे। मैं दो रूपों में उनके निकट रहा। एक तो मैं उनकी परिचर्या में नियुक्त था। मुझे गुरुदेव तुलसी ने स्वयं फरमाया था कि तुम मेरे निकट रहा करो और पंचमी का पात्र तुम रखा करो। इस तरह मैं उनकी परिचर्या से जुड़ गया। मैं यह तो नहीं कहता कि मैंने उनकी बहुत ज्यादा सेवा की, परन्तु इस बात का कुछ संतोष जरूर है कि उनके चरणों की, उनके तनुरत्न की सेवा करने का मौका इन हाथों को भी मिला था। मैं तो बालक था, मैं विधिपूर्वक काम करता अथवा नहीं भी करता, पर उस महापुरुष ने कभी मुझे कहा हो कार्य के बारे में कि मेरी सेवा में यह तुमने कमी रखी, मुझे याद नहीं आ रहा है।

मैं सेवा की दृष्टि से उनके निकट रहा। बहुधा उनके पास बैठता। पास में सोता तो कभी-कभी रात में भी उठकर मुझे उनकी सेवा का मौका मिलता। जब गुरुदेव के स्वास्थ्य की अनुकूलता न होती, उन्हें नींद न आती तो संतों से कहते कि मुदित को जगा दो। कभी-कभी मैं स्वयं जागकर गुरुदेव के पास बैठ जाता, उन्हें आगम पाठ सुनाता, कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाता।

दूसरा मेरा नैकट्य इस रूप में था कि उन्होंने मुझे संघ के अंतरंग कार्यों से भी जोड़ दिया था। इसलिए निकटता के साथ मुझे उस रूप में भी सेवा का अवसर मिला। मैं भूल न करूं तो मुझे याद है जसोल में मर्यादा महोत्सव हो रहा था। महोत्सव पूर्ववर्ती किसी दिन मध्याह्न में गुरुदेव के पास गया। उन्होंने मुझे पास में बैठने के लिए कहा। मैं बैठ गया तो बोले--'लो, तुम चौमासे लिखो। गुरुदेव श्रीमुख से फरमाते गए कि अमुक सिंघाड़े का चौमासा वहां, अमुक का वहां और मैं लिखता गया। सामान्यतया चौमासे की बात किसी को बताई नहीं जाती। लेकिन गुरुदेव ने वह काम मुझसे करवाया था। मैं यह इसलिए बता रहा हूं कि संघ की अंतरंग व्यवस्था के साथ मुझे उन्होंने बहुत पहले ही जोड़ लिया था। विशेषकर युवाचार्य महाप्रज्ञ और फिर आचार्य महाप्रज्ञ के सहयोगी के रूप में मुझे मनोनीत किया, स्थापित किया। इसलिए मैं उन व्यक्तियों में से एक हूं, जो गुरुदेव तुलसी के निकट रहने का अवसर प्राप्त कर चुके हैं।

मैंने देखा कि उनमें कितना वात्सल्य था। वत्सलता की दृष्टि से भी वह एक बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व था। प्रेम और वात्सल्य जैसे उनकी आंखों से टपकता था।

गुरुदेव तुलसी साधु-साध्वियों को, समणश्रेणी को और श्रावक-श्राविकाओं को विकास के लिए कितना उत्प्रेरित करते थे। वे विकास की प्रेरणा भी देते और विकास का अवसर भी देते थे। एक बार पश्चिम रात्रि को हम साधु

गुरुदेव की सेवा में बैठे थे। गुरुदेव ने फरमाया कि देखो संतों, अब तुम लोग तत्त्वज्ञान में आगे बढ़ो। आगे कहा--'हम तो सदा रहेंगे नहीं, आखिर तुम लोग नये हो, तुम सबको तत्वज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए।' उनके कहने का आशय यह था कि हमारी तो अब उम्र आ गई है, तुम लोगों को ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए। इस तरह यदा-कदा वे हमें विकास की प्रेरणा देते रहते थे।

गुरुदेव तुलसी का एक महत्त्वपूर्ण अवदान है अणुव्रत आन्दोलन। अभी साध्वीप्रमुखाजी ने जो बात कही, वह पूरी तो हमें जंची नहीं है। उन्होंने कहा कि अणुव्रत का पुनर्जन्म होना चाहिए। पुनर्जन्म तो उसका होना चाहिए जो पहले पूरा मर जाए। अणुव्रत तो मरा नहीं है, अभी जीवित है, फिर उसके पुनर्जन्म की बात कहां तक ठीक है। इसलिए पुनर्जन्म नहीं, अणुव्रत को और अधिक बलवान बनाने की जरूरत है। अणुव्रत आन्दोलन तो चल ही रहा है, उसे और ज्यादा गतिमान बनाने की जरूरत जरूर महसूस होती है।

गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी शुरू होने में अब केवल दो वर्ष बाकी रहे हैं। इस संदर्भ में हमारी यदा-कदा गोष्ठियां भी होती हैं। शताब्दी के कार्यों की विचारणा की दृष्टि से साधु-साध्वियों की हमारी एक परिषद बनी हुई है। उसमें महासभा के कार्यकर्ता भी भाग लेते हैं। जन्म शताब्दी के संदर्भ में अनेक योजनाएं बन रही हैं। करणीय कार्यों की दृष्टि से दो बातें मेरे मस्तिष्क में काफी स्पष्ट हुई हैं--

पहली बात--महाव्रती व्यक्तियों का विकास। इसमें चिंतन और प्रयास इस बात का हो कि गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष में सौ मुनि दीक्षाएं हो जाएं। सौ भाई-बहिन साधु अथवा साध्वी बनें। जन्म शताब्दी वर्ष में यह एक ध्येय सामने रखकर जितना हो सके, उतना हमें प्रयास करना है। मेरा विश्वास है कि प्रयास का कुछ न कुछ फल प्रायः आता है। साध्वीप्रमुखाजी और श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री यहां विराजमान हैं, अन्य साधु-साध्वियां भी हैं। मैं कहना चाहता हूं कि हम सबको इस कार्य में लगना चाहिए। केवल साधु-साध्वियों को ही नहीं, मैं स्वयं को भी इसके साथ जोड़ रहा हूं और कह रहा हूं कि हम सबको यह प्रयास करना चाहिए। मैं तो चाहता हूं कि धर्मसंघ का प्रत्येक साधु-साध्वी और समण-समणी यह प्रयास करे और श्रावक समाज का इसमें पूरा सहयोग मिले। वृद्ध इस कार्य में ज्यादा श्रम न कर सकें तो यह मंगलकामना तो जरूर करें कि संघ में अधिकाधिक दीक्षाएं हों। इसे भी मैं उनका श्रम मानूंगा। इस कार्य में श्रम भावनात्मक, वाचिक, कायिक या मानसिक--किसी भी रूप में हो सकता है। गुरुदेव के शताब्दी वर्ष में सौ मुनि दीक्षाएं हो जाएं, इसमें अभी से सबको लग जाना है। मान लीजिए कि सौ में कुछ कमी रह जाती है तो पूर्व के अभी ये जो दो वर्ष हैं, हम इसमें हुई दीक्षाओं को भी उसमें जोड़ लेंगे। इस तरह इन दो वर्षों में होने वाली दीक्षाओं को जोड़कर भी अगर शताब्दी वर्ष में हम सौ का लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं तो यह शताब्दी वर्ष की एक बड़ी उपलब्धि होगी।

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'साधु-साध्वियां ही नहीं, श्रावक-श्राविकाएं भी ध्यान दें। सुमेरमलजी स्वामी 'सुदर्शन' कल रात्रि को बता रहे थे कि पुराने जमाने में आचार्य श्रावकों से मांग कर लेते थे कि श्रावकजी! तुम्हारी चार संतानें हैं। उसमें से किसी एक को हमें दे दो। हम इस तरह की मांग न कर केवल इतना ही चाहते हैं--कोई दीक्षा के लिए तैयार हो तो उसे 'ना' नहीं कहें। आप कम से कम इस बात के लिए ही संकल्पित हो जाएं। ऐसे संकल्प के लिए मैं आप सबको आह्वान करता हूं। वैरागी की परीक्षा आप सौ बार करें, यह आपकी इच्छा, करना ही चाहिए, लेकिन मनाही तो न करें। बताएं कि आप में से कौन-कौन इसके लिए संकल्पित हो रहा है? जो संकल्प करना चाहें, वे खडे-खड़े मनाही करने का त्याग ले।'

(आचार्यवर के इस आह्वान पर सैकड़ों लोगों ने करबद्ध खड़े होकर आचार्यवर से यह संकल्प ग्रहण किया--**'हम संकल्प करते हैं कि कोई भी दीक्षार्थी हमारे परिवार में तैयार होगा तो ना कहने का आजीवन त्याग है')**

दूसरी बात--जन्म शताब्दी वर्ष में अणुव्रत का काम विशेष रूप से चले। गुरुदेव महाप्रज्ञ ने जीवन के अन्तिम दिन और अन्तिम रात्रि में अणुव्रत की बात हमारे साथ की थी। वे हम लोगों से कहा करते थे कि अणुव्रत को हमें और अधिक तेजस्वी बनाना है। मैं यह सोचता हूं और निर्णय करता हूं कि शताब्दी वर्ष में नये-नये व्यक्तियों को अणुव्रती बनाने और अणुव्रत के साथ जोड़ने का कार्य करना है। यह कार्य सभाओं, सेमिनारों, गोष्ठियों, प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आदि रूपों में हो सकता है। इससे अणुव्रत आन्दोलन और ज्यादा बलवान बनकर उभरेगा, इसका और ज्यादा प्रचार-प्रसार हो सकेगा। जन्मशताब्दी वर्ष के लिए और भी कई योजनाएं बन रही हैं, किन्तु मुख्य रूप से ये दो कार्य आज हमने आपके सामने रखे हैं।

कार्तिक शुक्ला द्वितीया--यह समणश्रेणी के जन्म का भी दिवस है। मैं समणश्रेणी के बारे में कहना चाहता हूं कि यह श्रेणी बहुत काम आ रही है। साध्वियों की अपेक्षा होती है तो हम समणियों को काम में लेते हैं। अभी तो समणियां प्रायः अवृद्ध हैं, आगे अवस्था आने के बाद ये कैसे काम में आएंगी? अभी तो ये शिक्षा, साहित्य, साध्वियों की सेवा आदि के कार्य कर रही हैं, बहुत काम कर रही हैं, देश-विदेश में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवनविज्ञान आदि का काम कर रही हैं। इस तरह समणियों का संघ की प्रभावना में बहुत योगदान है। आज मैंने सवेरे इनसे कहा कि समणियां अब धीरे-धीरे साध्वियों की श्रेणी में आने का विचार करें। जिनके सैंतालीस, अड़तालीस वर्ष आ गए, उन्हें श्रेणी आरोहण के बारे में सोचना है। समण श्रेणी से श्रमणश्रेणी में आरोहण कैसे हो सके, इस बारे में मैंने भी थोड़ा चिंतन किया है, उसकी क्रियान्विति यथासमय की जा सकेगी। अभी १ नवम्बर को कुछ क्रियान्विति हो ही रही है। पूर्व नियोजिका समणी परमप्रज्ञा और समणी प्रेक्षाप्रज्ञा श्रेणी आरोहण करने जा रही हैं। यह श्रेणी आरोहण का द्वार कभी बंद नहीं होना चाहिए, रास्ता खुला रहना चाहिए।

जन्मदिवस की बात आई तो बता दूं कि आज हमारे एक मुनि ऋषभकुमारजी का भी दीक्षा दिवस है। दिल्ली में सन १९८१ में इनकी दीक्षा हुई थी। इस तरह इनकी दीक्षा के तीस साल पूरे हो रहे हैं। ये अधिकांश मेरे पास रहे हैं। बहुत अच्छी सेवा करते हैं। हमारी तो करते ही हैं, संतों की भी सेवा करते हैं। मैं चाहता हूं कि ये सेवा करते रहें और स्वास्थ्य को अच्छा रखते हुए अपना खूब विकास करें।'

गुरुदेव तुलसी के प्रवचन साहित्य के इक्कीस भाग अब तक आ चुके थे।' पट्ट पर स्थापित गुरुदेव की प्रवचनमाला की तीस पुस्तकों की ओर संकेत करते हुए पूज्यवर ने कहा--'इधर साहित्य, उधर साहित्य, आज इस अवसर पर उनका इतना साहित्य देखकर लगता है जैसे मैं साहित्य के बीच में बैठा हूं। गुरुदेव की व्याख्यान की अपनी विशिष्ट कला थी। उनके व्याख्यान में संगान भी होता था, कहानियां भी आती थीं, आरोह और अवरोह दोनों रहता था। उनके व्याख्यान को पुस्तकाकार में गुंफित करने का कार्य महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके संपादक मुनिश्री धर्मरुचिजी स्वामी नियम-कानूनवेत्ता हैं। इन्होंने गुरुदेव के प्रवचनों का जो संपादन किया, उसमें से कुछ पुस्तकों को मैंने देखा है। इन्होंने काफी श्रम किया है। व्याख्यान देनेवालों के लिए गुरुदेव तुलसी का व्याख्यान साहित्य बहुत लाभदायी हो सकता है। अभी आई पुस्तकों को मैंने देखा। पूरी समीक्षा तो पुस्तक पढ़ने के बाद ही की जा सकती है, किन्तु अनुमान है कि अच्छा संपादन हुआ है। हमारे लिए और साधु-साध्वियों के लिए काफी पठनीय सामग्री है। मैं इस संदर्भ में कहना चाहता हूं कि औषधि संबंधी विगय वर्जन का जो टैक्स लगता है, उस टैक्स से आपको (मुनिश्री धर्मरुचिजी को) यावज्जीवन के लिए मुक्त करता हूं।'

महाश्रमण द्वार का लोकार्पण

२६ अक्टूबर। परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज प्रातः राजमार्ग के सन्निकट केलवा के प्रवेश मार्ग पर पूज्यवर के चतुर्मास के उपलक्ष्य में श्री संपतलालजी ख्यालीलालजी मादरेचा परिवार की ओर से निर्मित 'महाश्रमण द्वार' का लोकार्पण किया गया। पूज्य आचार्यवर प्रातःकालीन भ्रमण और घरों में चरणस्पर्श के पश्चात वहां पधारे। केलवा के सरपंच श्री दिग्विजयसिंहजी राठौड़ ने केलवा के वरिष्ठ नागरिकों और मादरेचा परिवार के साथ आचार्यवर से मंगलपाठ सुनकर द्वार को लोकार्पित किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में केलवा राजपरिवार से संबद्ध श्री हरिसिंहजी राठौड़ और श्री संपतलालजी मादरेचा ने इस प्रसंग में अपने विचार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'द्वार का लोकार्पण हुआ है। मादरेचा परिवार इससे जुड़ा हुआ है। सम्पतजी मादरेचा अपने ढंग के अच्छे श्रावक हैं। ये खूब अच्छा काम करें। द्वार पर आने वाले लोग अच्छी प्रेरणा प्राप्त करें, यह अपेक्षा है।'

दुःखमुक्ति का मार्ग है संयम

तेरापंथ समवसरण में प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के छठें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जहां मोह की चेतना होती है, वहां व्यक्ति एक जन्म से दूसरे जन्म तक भ्रमण करता है। दुःखों की परम्परा अनवरत चलती रहती है। जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर दुःखों से छुटकारा पाने के लिए मोह की चेतना को त्यागना होगा। मोह की चेतना को अप्रभावी बनाने के लिए संयम और वैराग्य को धारण करना होगा।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

केलवा के शोभजी श्रावक के वंशज स्वर्गीय श्रावक शेषमलजी कोठारी के स्मृतिग्रंथ के संदर्भ में श्री मोहनलाल कोठारी, डॉ. यशवंत कोठारी, डॉ. ओकारसिंह राठौड़, श्री प्रकाश धाकड़, श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट, श्री कुन्दनलाल कोठारी एवं श्रीमती पुष्पा कोठारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति की। परिजनों ने स्मृतिग्रंथ पूज्य आचार्यवर को उपहृत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'कोठारी परिवार ने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का प्रयास किया है। परिवार के लोग उनकी विशेषताओं को आत्मसात करने का प्रयास करें और पवित्र कार्यों की प्रेरणा प्राप्त करें।'

कार्यक्रम में तिरुकलीकुन्द्रम (पक्षीतीर्थ) केन्द्र की यात्रा करके लौटी समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। श्री चंपालालजी दूगड़ ने समणीकेन्द्र की रिपोर्ट पूज्यवर को भेंट की। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'समणी ज्योतिप्रज्ञाजी आदि समणियां दक्षिण यात्रा कर आई हैं। समणियां देश-विदेश में अपने ढंग से अच्छा कार्य करती हैं। श्रावक समाज की संभाल करती हैं। आगे भी अच्छा कार्य करती रहें।'

न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं एवं विधिवेत्ताओं का द्विदिवसीय सम्मेलन

आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा समायोजित न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं एवं विधिवेत्ताओं का द्विदिवसीय सम्मेलन प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में फोरम के प्रभारी मुनि रजनीशकुमारजी, श्री बसंतीलालजी बाबेल, श्रीमती रंजीता कावड़िया ने सम्मेलन के विषय 'पारिवारिक एवं सामाजिक विवादों का सामाजिक मंच द्वारा निस्तारण' पर अपने विचार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा समायोजित इस सम्मेलन का विषय बहुत महत्त्वपूर्ण है। लोकतंत्र में न्यायपालिका का अपना महत्त्व है और उसके प्रति मेरे मन में सम्मान की भावना भी है। तेरापंथ समाज के अनेक व्यक्ति न्यायाधीश और अधिवक्ता के रूप में न्याय के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। समाज, परिवार और संस्थाओं में किन्हीं कारणों से विवाद की स्थितियां बन जाती हैं। प्रथम प्रयास तो यह हो कि वैसी स्थितियां उत्पन्न ही न हों और कदाचित उत्पन्न हो जाएं तो उसे आत्मीय भाव से परस्पर चिंतनपूर्वक सुलझाने का प्रयास होना चाहिए। न्यायालय जाने की अपेक्षा यदि अनौपचारिक रूप से विवादों को सुलझाया जा सके तो एक सुन्दर कार्य हो सकता है तथा समय व अर्थ की हानि से भी बचा जा सकता है। न्यायाधीश और अधिवक्ता प्रबुद्ध व्यक्ति होते हैं। सम्मेलन में इस विषय पर चिंतन हो कि अपनी बुद्धि से सामाजिक विषयों को अनौपचारिक रूप में कैसे सुलझा सकते हैं? यह सम्मेलन निष्पत्तिमूलक बने।' कार्यक्रम के अन्त में अधिवेशन के सहसंयोजक श्री देवेन्द्र कच्छारा ने आभार व्यक्त किया।

इस द्विदिवसीय सम्मेलन में तेरापंथ समाज के लगभग साठ न्यायाधीश और अधिवक्ता संभागी बने। संभागियों को पूज्यवर के पावन पाथेय के अतिरिक्त शासनश्री मुनि सुखलालजी, मुनि उदितकुमारजी, शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी और फोरम के प्रभारी मुनि रजनीशकुमारजी द्वारा प्रेरणा प्राप्त हुई। कोटा के सिविल जज श्री प्रकाश पगारिया, बारां के जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री कमलसिंह नाहर, राजसमन्द बार एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री मुकेश तलेसरा, सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री सुन्दरलालजी मेहता आदि ने भी संभागियों को प्रशिक्षण दिया। इस सम्मेलन में फोरम द्वारा श्री दिलीप कावड़िया को राष्ट्रीय अधिवक्ता मंच के संयोजक के रूप में मनोनीत किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रेक्षा पुरस्कार समर्पण समारोह

२६ अक्टूबर। परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में आज मध्याह्न में वर्ष २०१० का आचार्य महाप्रज्ञ प्रेक्षा पुरस्कार रशियन महिला डॉ. नतालिया क्रिवोरोतोवा को प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है--मदनचन्द तोलाराम गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा सन १९९९ से यह पुरस्कार प्रतिवर्ष प्रेक्षाध्यान के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति को दिया जाता है। पुरस्कार प्राप्तकर्ता डॉ. नतालिया पेशे से मनश्चिकित्सक है और सन २००५ से प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय शिविर में संभागी बन रही है। रशिया के कुरगन शहर में प्रेक्षाध्यान केन्द्र चलाती हुई प्रेक्षाध्यान के प्रचार-प्रसार हेतु सराहनीय प्रयास कर रही है। डॉ. नतालिया के सत्प्रयासों से कुरगन में सात सौ से अधिक व्यक्ति प्रेक्षाध्यान से लाभान्वित हुए हैं और वे भी प्रेक्षाध्यान के प्रचार-प्रसार के कार्य में सहयोगी बन रहे हैं।

ट्रस्ट की ओर से श्री योगेन्द्र गोठी ने प्रशस्तिपत्र, प्रतीकचिह्न और पुरस्कार की राशि एक लाख पचहत्तर हजार का चैक डॉ. नतालिया को समर्पित किया। डॉ. नतालिया ने अपने स्वीकृति भाषण में भावपूर्ण स्वरों में कहा--'मेरे जीवन का यह बहुत महत्त्वपूर्ण दिन है। प्रेक्षाध्यान बहुत अच्छी प्रविधि है। मैं तो सोचती हूं कि यह विश्व के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचे, जिससे उनकी जीवनशैली स्वस्थ और प्रशस्त बन सके। यह पुरस्कार मुझे प्रेक्षाध्यान के लिए और अधिक कार्य करने की प्रेरणा देता रहेगा।' प्रेक्षा इंटरनेशनल ट्रस्ट के मुख्य न्यासी श्री सुरेन्द्र चोरड़िया ने परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ की कृति 'जीवन की पोथी' का रशियन अनुवाद पूज्यवर को उपहृत किया। प्रेक्षाध्यान प्रभारी मुनि कुमारश्रमणजी ने रूस, यूक्रेन आदि देशों में चलने वाली प्रेक्षाध्यान की गतिविधियों की अवगति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने पुरस्कार के प्रसंग में कहा--'आज डॉ. नतालिया को प्रेक्षा पुरस्कार दिया गया। मुझे ज्ञात हुआ कि यह प्रेक्षाध्यान का अभ्यास और उसके प्रचार-प्रसार का प्रयास कर रही है। भविष्य में ऐसा अभ्यास और प्रयास चलता रहे। दूसरे लोगों को भी प्रेक्षाध्यान करने और शिविर में संभागी बनने हेतु प्रेरित करती रहे, शुभाशंसा। कार्यक्रम का संचालन श्री बजरंग जैन ने किया।

ज्ञानशाला है धर्मसंघ का महत्त्वपूर्ण उपक्रम

३० अक्टूबर। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में जलगांव, नाथद्वारा, कांकरोली की ज्ञानशालाओं ने अपनी-अपनी प्रभावी प्रस्तुतियां दीं। पंजाब प्रान्तीय तेरापंथी सभा के महामंत्री श्री कमल नौलखा ने परमाराध्य आचार्यवर से सन् २०१४ में महावीर जयंती व अक्षय तृतीया पंजाब में करने की प्रार्थना की। रायपुर के ढाई सौ लोगों का संघ सन २०१८ के चतुर्मास की प्रार्थना के साथ श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। संघ की ओर से गीत प्रस्तुत किया गया। दिल्ली तेरापंथी सभा के पूर्व महामंत्री श्री धनपत लूणिया ने अणुव्रत के १७३५ संकल्प पत्र पूज्यप्रवर को भेंट किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के छठें अध्याय में उल्लिखित संयम को परिभाषित करते हुए कहा--'गृहस्थों को संयम की दृष्टि से अनेक श्रेणियों में रखा जा सकता है। कुछ गृहस्थों का धार्मिक जीवन अनुत्तर होता है। गृहस्थों में सम्यक् ज्ञान परिपुष्ट हो। सम्यक्त्व धार्मिक जीवन का मूल आधार है। इससे चारित्र की आराधना समीचीन हो सकती है।'

विभिन्न ज्ञानशालाओं की प्रस्तुति के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण उपक्रम ज्ञानशाला का देशव्यापी संचालन हो रहा है। मेवाड़ अंचल में लगभग चालीस ज्ञानशालाएं चल रही हैं। ज्ञानशाला का उद्देश्य है--बच्चों में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिकता का विकास। ज्ञानशाला के शिक्षक एक प्रकार से संघ की सेवा कर रहे हैं।'

तेरापंथी महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ की ओर से एक संगोष्ठी ज्ञानशाला प्रभारी मुनि उदितकुमारजी एवं सहप्रभारी मुनि हिमांशुकुमारजी के उपपात में शिक्षक-प्रशिक्षक पाठ्यक्रम के संदर्भ में हुई। राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहन चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री बजरंग जैन ने पाठ्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस संगोष्ठी में कई आमंत्रित व्यक्ति उपस्थित थे। रात्रिकालीन कार्यक्रम में राजनगर कन्यामंडल ने रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया। महाराष्ट्र के जलगांव से समागत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने तीन दिन तक गुरु उपासना का लाभ लिया। इसमें पचास ज्ञानार्थी, प्रशिक्षक व कार्यकर्ता थे।

नवदंपति शिविर 'तालमेल' का आयोजन

अ.भा.तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मेवाड़स्तरीय त्रिदिवसीय नवदंपति शिविर 'तालमेल' का आयोजन हुआ। ३१ अक्टूबर को आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में कांकरोली महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया ने शिविर की समग्र जानकारी दी। शिविर संभागियों ने अपने अनुभव प्रस्तुत किए। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में ऐसे शिविरों की आवश्यकता को रेखांकित किया। मंत्रीमुनि सुमेरमलजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में पारिवारिक सौहार्द के लिए सहिष्णुता एवं धार्मिक भावना को अत्यन्त आवश्यक बताया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त कार्यक्रमों में एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है--स्वस्थ परिवार का निर्माण। इसके लिए समय-समय पर अनेक उपक्रम

चलाए जाते हैं। भारतीय संस्कृति में विवाह-बंधन को जीवन भर का संबंध माना जाता है। जीवन के सोलह संस्कारों में विवाह भी एक संस्कार है। पति-पत्नी के रिश्तों में उभयपक्षीय समर्पण होता है। दोनों की जीवन-डोर में कभी गांठ भी लग सकती है, किन्तु उस गांठ को काटने का नहीं, खोलने का प्रयास होना चाहिए।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'संयम और तप में संल्लीन व इसके अभ्यासी व्यक्ति को सुगति प्राप्त होती है। संयम व तप के अभाव में साधु वेश में भी सुगति संभव नहीं हो पाती। संयम की भावना का अवतरण होने से जीवन का कल्याण होता है।' नवदंपति शिविर के संदर्भ में पूज्यवर ने कहा--'हर व्यक्ति के जीवन में संयम व सहिष्णुता का समावेश बहुत आवश्यक है। परिवार में सौहार्दपूर्ण एवं धार्मिकता से ओतप्रोत वातावरण एवं सद्‌संस्कारों का साया रहे। शांतिपूर्ण सहवास के लिए स्वार्थ, दुराग्रह और कदाग्रह से बचें।'

मुनि जितेन्द्रकुमारजी एवं मुनि जयंतकुमारजी ने अपने दीक्षा दिवस पर अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए पूज्यवर के मंगल आशीर्वाद की कामना की। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'मुनि जितेन्द्रकुमारजी युवा, उत्साही एवं कार्य के प्रति समर्पित संत हैं। साहित्य के क्षेत्र में भी इन्होंने प्रवेश किया है। मुनि जयंतकुमारजी विनीत और जनसंपर्क प्रभारी मुनि हैं। शासनश्री मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' की सेवा में हैं। जागरूकता के साथ ये अपने कार्य का संपादन करते हैं। दोनों संत खूब सेवा करते रहें। आज के दिन और भी अनेक व्यक्ति दीक्षित हुए हैं। वे भी अपना अच्छा विकास करें।'

नवदंपति शिविर तालमेल का उद्‌घाटन कनकविला में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी की सन्निधि में हुआ। अ. भा.महिला मंडल की प्रधान ट्रस्टी श्रीमती सुशीला पटावरी ने स्वागत भाषण किया। शिविर के विभिन्न सत्रों में संभागियों को शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, महिला मंडल प्रभारी साध्वी कल्पलताजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी विमलप्रज्ञाजी, साध्वी शुभ्रयशाजी, साध्वी मुदितयशाजी, श्री प्रफुल्ल पारीक, श्री राजीव छाजेड़ ने भी विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया। शिविर में मुम्बई से समागत बाईस जोड़ों सहित चौवालीस दंपतियों ने भाग लिया। शिविर काफी प्रभावक व सार्थक रहा। मध्याह्न में सावधिक समण दीक्षा के दीक्षार्थी श्री गणपतलाल बोहरा की शोभायात्रा निकाली गई। रात्रि में दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ।

दीक्षा समारोह का भव्य आयोजन

१ नवम्बर। आज प्रातः पूज्यवर के मंगल मंत्रोच्चार के साथ दीक्षा समारोह का शुभारंभ हुआ। स्वागताध्यक्ष श्री परमेश्वर बोहरा, चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी, महामंत्री श्री सुरेन्द्र कोठारी, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री बाबूलाल कोठारी ने अपने विचार रखे। समणीवृन्द के सामूहिक गीत के बाद समणी भावितप्रज्ञाजी ने श्रेणी आरोहण करने वाली समणीद्वय का परिचय दिया। श्रेणी आरोहण के लिए तत्पर पूर्व समणी नियोजिका परमप्रज्ञाजी, प्रेक्षाप्रज्ञाजी एवं सावधिक समण दीक्षा के लिए प्रस्तुत गणपतलाल बोहरा ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी एवं समण सिद्धप्रज्ञजी ने दीक्षार्थियों के प्रति अपनी मंगलकामना व्यक्त की। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के महामंत्री श्री बजरंग जैन ने आज्ञापत्र का वाचन किया, जिसे दीक्षार्थी गणपतलाल के परिजनों ने पूज्यवर को समर्पित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भगवान महावीर द्वारा वर्णित अनगार धर्म में साधु जीवन को मान्य किया गया है, जबकि आगार धर्म के अन्तर्गत श्रावक सामायिक, पौषध की क्रिया करता है। पौषधोपवास श्रावक जीवन की एक साधना है। कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जो विशेष साधना के लिए साधु जीवन की दिशा में गतिमान हो पाते हैं। गुरुदेव तुलसी ने कितने-कितने लोगों को दीक्षित किया। कितना उपकार किया। वर्तमान में अधिकांश साधु-साध्वियां उन्हीं के द्वारा दीक्षित हैं। दीक्षित होने की भावना अपने आप में विशेष बात है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष सामने है। मैं चाहता हूं, उस अवसर पर सौ साधु-साध्वियों की दीक्षा हो तथा अणुव्रत का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो। अधिक से अधिक लोग अणुव्रती बनें।' श्रेणी आरोहण के लिए तत्पर समणीजी के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'समणी परमप्रज्ञाजी ने समणी नियोजिका और निर्देशिका के रूप में संघ की सेवा की है। समणी प्रेक्षाप्रज्ञा शालीन व संयत समणी लगी। गणपतजी बोहरा श्रावक हैं जो लंबे समय से दीक्षित होने की भावना रखते हैं।'

पूज्य आचार्यवर ने आर्षवाणी का उच्चारण करते हुए लगभग १०.२५ बजे समणीद्वय को मुनि दीक्षा एवं

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

गणपतजी बोहरा को सावधिक (तीन माह) समण दीक्षा प्रदान की। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने आर्षवाणी के समुच्चारण के साथ दोनों साध्वियों का केशलोच कर रजोहरण प्रदान किया। समण सिद्धप्रज्ञजी ने नवदीक्षित समण को प्रमार्जनी प्रदान की। नवदीक्षितों के नाम इस प्रकार हैं--

समणी परमप्रज्ञाजी	साध्वी परमप्रभाजी
समणी प्रेक्षाप्रज्ञाजी	साध्वी प्रेक्षाप्रभाजी
श्रावक गणपतलाल बोहरा	समण गौतमप्रज्ञजी

अपने दीक्षान्त प्रवचन में परमपूज्य आचार्यवर ने कहा--'अब तुम्हारा सब काम संयमपूर्वक हो, सारी क्रियाएं यत्नापूर्वक हों। विनयभाव को निरंतर पुष्ट करते हुए खूब साधना व सेवा करो। स्वकल्याण करते हुए संघ व अपने कुल का नाम रोशन करो।'

दीक्षा कार्यक्रम के अनंतर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ अरुण चतुर्वेदी ने कहा--'दीक्षा कार्यक्रम में उपस्थित होने को मैं अपना परम सौभाग्य मानता हूं। पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण की प्रेरणा और मार्गदर्शन समाज को मिलता रहे। हम राजनीति के लोगों पर आपका आध्यात्मिक अंकुश बना रहे।'

इन दिनों चल रहे इंटरनेशनल प्रेक्षाध्यान शिविर के संभागी यूक्रेन के अलेक्जेंडर ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अपनी भाषा में अभिवंदना गीत प्रस्तुत किया। रशियन शिविरार्थियों ने हिन्दी में प्रेक्षागीत का संगान कर सबको चकित कर दिया। चंडीगढ़ से समागत श्री विजय गोयल व अनिल जैन ने नशामुक्ति के संकल्पपत्र भेंट किए। मुनि मोहजीतकुमारजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए अपने अड़तीसवें दीक्षा दिवस पर पूज्यवर के मंगल आशीर्वाद की कामना की।

आर्दा साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. श्रीमती सुमनदेवी दूगड़ (पुत्रवधु-स्व. दीपचन्दजी दूगड़, धर्मपत्नी-श्री धनपतसिंह दूगड़, लाडनूं) की पुण्यस्मृति में श्रीमती पुष्पादेवी, विनोद, सायर, सौरभ, खुशबू, स्वाति, अंकित दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

२५००/- जैनरत्न, प्रेक्षा प्रशिक्षक, समाजभूषण सुश्रावक स्व. जेठाभाई जवेरी (मुम्बई) की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में डॉ. रश्मिभाई जेठाभाई जवेरी, मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री सुमेरमलजी बैद (लाडनूं) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती बुधवंतकंवर बैद, सुपुत्र छतरसिंह, कमल व राजेश, सुपौत्र अभिषेक, राहुल व वैभव बैद, सेलम (तमिलनाडु) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती शकुंतला गोयल (धर्मपत्नी-श्री महावीरजी गोयल, जालंधर कैंट) की दूसरी पुण्यतिथि पर उनके सुपुत्र पंकज, अमित गोयल परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री विजयचन्द-किरणदेवी गोलछा (बीकानेर-कोलकाता) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ पर उनके सुपुत्र व पूत्रवधू विनीत-वंदना, सुपौत्री मुसकान व सुपौत्र कौशल गोलछा द्वारा प्रदत्त।

- परमाराध्य आचार्यप्रवर ने ३ नवम्बर को प्रातःकालीन कार्यक्रम में फरमाया है **यदि कभी दक्षिण की यात्रा होगी तो एक चातुर्मास बैंगलोर में करने का भाव है।**

११ नवम्बर को केलवा से विहार होने के पश्चात आदर्श साहित्य संघ का शिविर कार्यालय पूज्य आचार्यवर की सेवा में रहेगा। सम्पर्क की दृष्टि से अब हमारा पता है--

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति
पो. केलवा-३१३ ३३४, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**